BA-I (H)
मैथिली
पेपर - 2

पृथ्वी पुत्र

प्रो० संजीत कुमार राम
अतिथि शिक्षक
मैथिली विभाग
V.S.J. College, Rajnagar

पृथ्वीपुत्रमे दलित मजदूरक जीवन

पृथ्वीपुत्र 'उपन्यास' मैथिली साहित्यमे स्रोति पर आधारित अछि। ललित रचित ई उपन्यास एकटा दलित वर्गक संघर्ष आधारित अछि। सँगहि-सँग किसानक जीवन व्यथा देखाओल गेल अछि। पृथ्वीपुत्र 'मे सिर्फ पासवान एक गृहस्थ छथि। जंगबहादुर जमिन्दारिमे, विशेषी पासवान अपन परिवारक संग आर्थिक विपन्नतामे जीवन-यापन करैत छथि। मुदा सबैक दरमियान जमी

अपन-अपन वासस्थानि भेल। कुशिमहा
मीर सिंगहा खेत भेटलनि। अपन
स्वामित्व भेलापर ओर पहिल बेर
भूमिहीन निम्न मध्यमवर्गीय लोकके
ममता आ सम्बंध भेल। प्रत्येक खेत
जोति कए मकई, कुरथी आ मडुआ
बुनलनि जाहि सँ बिसेसरी अपन-अपन
परिवारक भरण-पोषण करैत छलाह,
किन्तु जमीन्दार अपन अधिकार
खेतपर कायम रखलक। प्रत्येक लड़ाई
कारणेँ खेतीहर दलित मजदूर बिसेसरी
आ जमीन्दार जगबहादुर सिंग
संघर्ष भऽ गेल कुछ विजय प्राप्त
भेल बिसेसरी के। सर्वे के बाद
सँ बिसेसरी एक दम खेतें मेहनतक
बदौलत जीवनयापन करबाक प्रवृत्ति
जुड़ल रहैक।

दलित जीवन वा निम्नजाति
क दुनियाँ मजदूरी प्रधान होइत अछि।

3

दलित जीवन कर्म - सौन्दर्य कलात्मक आर्थिक व्यापिक नाम आछि। जतुआ खेतीक विन्यासक अलावे दलित जीवनक पँचैती व्यवस्था, ओकर कार्यप्रणाली, ओकर महत्ता, दलित जीवन सोलापन आ सिनाह आपसी मतभेद सब किछु अत्यन्त वास्तविक वर्णन भेल आछि। एहि उपन्यास मे बिजली, सनेपा, गेनालाल तथा स्वयं बिसेसरीक माध्यमसँ मिथिलाक दलित जीवन आ संघर्ष वृहद आख्यान प्रस्तुत अछि।

ई उपन्यास मे हृदयक लगाव आ प्रेमकेँ सेहो देखाओल गेल आछि। बिसेसरीक बेटी बिजलीक बियाह हीरालाल पेतोनसँ भेल आछि। हीरालाल देखबा मे एकदम कारी, बदसूरत नाक उठा बिजली के नहि पसिन रहैत। ओकर तँ हर दम आँखिमे सोभा के रहैत कलपुकिसर जिनका संग प्रेम रहैत।

सेरूप यद्यपि अनपढ़ रहैक, मुदा ओकरा कर्मसँ व्यावहारिक ज्ञान विशेष छलैक। एक दिन ओ परवाहा हाट पर सुरजा मीसरक बाबा सुनने छल जाहिमे ओ बाजल छल जे धन आ धरती बाँटि कए रहतैक। समयवला बात पेट खायत। ई बात सेरूपके मस्तिष्कमे नीक जकाँ जा चुकल छल। एही क्रममे ओ कहैत अछि जे धरतीक ओकर विवेक जे ओकरा जोति कोड़ि कए उपजाय योग्य बनबैत अछि। ई काज हरवाहे करैत छैक। तेँ आधरतीक असली बेता बिकवैह।

अति-सुधारक सपनाकेँ ध्यानमे राखि लिखल गेल अछि ई उपन्यास। वर्तमान समयमे अति-सुधार एक विकट समस्या थिक। जकर परिणामस्वरूप ठाम-ठामपर जमा

घर मे मारि-दंगा आ फसाद होइत अछि।

वस्तुतः पृथ्वीपुत्र उपन्यास मैथिली बलात्कारीक आ भूमिसुधारक आन्दोलन प्रमुख दस्तावेज थिक। ई उपन्यास सँ भूमिहीन, दलित, मजदूर लोकके संघर्ष आ क्रान्ति करबाक लेल मार्ग दर्शन करैत अछि।